एक अप्रतिम तीर्थयात्रा

२८ दिसम्बर, २०१७

आत्मीय साधको,

हम आ पहुँचे हैं, सिद्धयोग साधना के उल्लेखनीय वर्ष के समापन के दिनों में। वर्ष २०१७ के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश हमारे श्वास-प्रश्वास को मार्गदर्शित कर रहा है — ठीक उसी तरह, जैसे १ जनवरी से करता आ रहा है, जब हमने 'एक मधुर सरप्राइज़' सत्संग में उनका सन्देश प्राप्त किया था :

> दिव्य हृदय की सुगन्ध को अपने श्वास में भर लो।
> परम आत्मा के प्रकाश में मुदित हो जाओ।
> दिव्य हृदय की कल्याणकारी शक्ति के साथ अपने प्रश्वास को मृदुलता से बहने दो।

श्रीगुरुमाई जब भी कोई सिखावनी प्रदान करती हैं तो उसके साथ अपना आशीर्वाद भी प्रदान करती हैं ताकि हम उस सिखावनी को अभ्यास में उतार सकें और अपने जीवन में उसके लाभों का अनुभव कर सकें। और, अहा! इस वर्ष श्वास की शक्ति की यह यात्रा कितनी अद्‌भुत रूप से कल्याणकारी व परिवर्तनकारी रही है!

पूरे २०१७ के दौरान, हमने अपने स्थानीय क्षेत्रों और सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर वैश्विक हॉल में, सिद्धयोग शिक्षण एवं अध्ययन कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया। नववर्ष सन्देश हमारे लिए असंख्य सुन्दर रूपों में प्रकट हुआ है, 'श्रीगुरुमाई के सन्देश की कलाकृति' के हमारे अध्ययन से; श्रीगुरुमाई ने जो सिखावनियाँ दीं उनका परिपालन करने से — 'हर कृत्य में प्रेम' में, उनके 'प्रकाशमय वचन' में और उनके प्रवचन, 'कल्याणकारी सहचर' में; और, यह नववर्ष सन्देश हमारे लिए उजागर हुआ है, सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान-शिविर में हमारी प्रतिभागिता द्वारा तथा श्रीगुरुमाई की ओर से 'वर्ष २०१७ के लिए क्रिस्मस की शुभकामनाओं' में हमने उनके जिस प्रेम की अनुभूति की, उसमें — ऐसा प्रेम जो एक अथाह भी है और जिसका तत्क्षण अनुभव भी होता है।

आप सभी ने श्रीगुरुमाई के सन्देश का अध्ययन करने से प्राप्त हुए अपने अनुभव व अन्तर्दृष्टियाँ अत्यन्त उदारता से व्यक्त की और भेजी भी हैं — अपने शब्दों में, चित्रों में और अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियों द्वारा। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपके द्वारा बताए व भेजे गए प्रत्येक अनुभव ने अन्य अनगिनत साधकों की साधना को प्रेरित किया है।

आपकी अभिव्यक्तियों ने चाहे कोई भी रूप ले लिया हो, एक भाव है जो इन सभी को एक सूत्र में पिरोए हुए है, और वह है, कृतज्ञता का भाव। आपकी अभिव्यक्तियाँ व अनुभव इस बात को प्रतिबिम्बित करते हैं कि किस प्रकार श्रीगुरुमाई के सन्देश ने श्वास के साथ आपके सम्बन्ध को रूपान्तरित किया है। आपकी अभिव्यक्तियों द्वारा एक गहन अन्तर-समझ प्रकट होती है जो आपको प्राप्त हुई है, और जो यह बताती है कि एक ऐसी चीज़ जिससे आप अत्यन्त घनिष्ठ रूप से परिचित हैं, यानी साँस का चलना, इसमें ऐसी शुद्धिकारक शक्ति है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सच में, श्रीगुरुमाई की कृपा हमारे जीवन में नित्य-उपस्थित है — यह हमेशा ही बहुत निकट है, और भी निकट है, निश्चित ही हमारे अपने श्वास से भी अधिक निकट है।

जैसे कि १०वीं शताब्दी के कश्मीर के ऋषि क्षेमराज कहते हैं :

> मैं अपने श्रीगुरु की अलौकिक वाणी का वन्दन करता हूँ जो नित्य नवीन अर्थ उजागर करती है और उस नाव की तरह है जो साधक को संशयरूपी अगाध सागर के पार करा देती है।[१]

जब हमें श्रीगुरु की सिखावनियाँ प्राप्त होती हैं, जब हम उन पर मनन करते हैं और श्रीगुरु की सिखावनियों के अनुसार अपना जीवन जीने का प्रयत्न करते हैं, तो हमारे अन्दर नवीन अन्तर्दृष्टियों का उदय होता है। हम क़दम-दर-क़दम, अपनी दिव्य आत्मा की अनुभूति की ओर बढ़ते जाते हैं।

और अब हम उस दिव्य मोड़ पर खड़े हैं जहाँ हम वर्ष २०१७ को बिदा कर रहे हैं और आने वाले वर्ष २०१८ का स्वागत कर रहे हैं। इस नववर्ष के प्रथम दिन, हम श्रीगुरु की अलौकिक वाणी के प्रति, श्रीगुरुमाई की जीवन रूपान्तरणकारी सिखावनियों के प्रति अपना सम्मान अर्पित करेंगे, 'एक मधुर सरप्राईज़' सत्संग में भाग लेकर।

नववर्ष के प्रथम दिन की ही तरह, 'एक मधुर सरप्राइज़' भी नित्य-नवीन है। यह झिलमिलाता है; यह चमचमाता है। जैसे-जैसे १ जनवरी निकट आती जा रही है, पूरे सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में प्रतीक्षा और उत्सुकता बढ़ती जा रही है। कैसी दिखेगी वह भव्य नौका जब वह २०१८ के किनारे पर होगी? कैसे होंगे उसके रंग? क्या प्रकट होगा जब उस नौका के पाल खुलेंगे और उनमें कृपा की वैभवशाली हवाएँ भरेंगी?
हमें जल्द ही पता चलेगा! क्या आप दिन गिन रहे हैं? मैं तो गिन ही रहा हूँ। ☺

बड़े हर्ष के साथ, मैं आपको इस अप्रतिम कार्यक्रम, ‘एक मधुर सरप्राइज़ सत्संग २०१८’ में भाग लेने के लिए आमन्त्रित करता हूँ। १ जनवरी को वैश्विक हॉल में आप सभी के साथ होने की मैं बड़ी अधीरता प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आदर व प्रेम सहित,

स्वामी ईश्वरानन्द
सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक

[१]स्पन्दकारिका, ४.१, अंग्रेज़ी भाषान्तर ©२०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।